

छात्रों में शैक्षिक आकांक्षा और व्यक्तित्व पर पारिवारिक माहौल के प्रभाव का अध्ययन

सुरेश सिंह कुशवाहा

शोधार्थी

सार

किशोरों के लिए अपने घर के ढांचे के अंदर से आने वाले समर्थन की बड़ी मात्रा का पता लगाना संभव है। इस समय अवधि के दौरान होने वाला एक पुल चरण किशोरावस्था है, जो इस समय के दौरान एक चरण से दूसरे चरण में संक्रमण की अवधि है। माता-पिता के साथ अच्छे संबंध बनाना किशोरों के व्यक्तित्व के निर्माण में एक महत्वपूर्ण घटक है, जो बदले में उन्हें अपने लक्ष्यों को पूरा करने में सहायता कर सकता है। किशोरों के व्यक्तित्व विकास के लिए यह संबंध आवश्यक है। इस तथ्य के अलावा कि परिवार का माहौल एक परिवार से दूसरे परिवार में भिन्न होता है, माता-पिता और बच्चों के बीच भी असमानताएँ होती हैं। परिवार का माहौल सभी परिवारों के लिए एक जैसा नहीं होता है। साथ ही यह व्यापक रूप से समझा जाता है कि शैक्षणिक प्रदर्शन को निर्धारित करने में शैक्षिक इच्छा एक महत्वपूर्ण तत्व है, इसे शैक्षणिक प्रेरणा का एक महत्वपूर्ण घटक भी माना जाता है। परिवारों के भीतर होने वाली विविधता के कारण, जिस वातावरण में किशोरों का पालन-पोषण होता है, उसकी प्रकृति उनके द्वारा स्वयं के लिए निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों को प्रभावित कर सकती है। चोट पर नमक छिड़कने के लिए, हर परिवार का माहौल अनोखा होता है।

मुख्य शब्द: पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक आकांक्षा, किशोर

प्रस्तावना :-

शिक्षा मानव जीवन की संवाहक है, इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजातशक्तियों का विकास, ज्ञान कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। शिक्षाव्यक्तियों के सर्वांगीण विकास के लिए निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षाकी प्रक्रिया उतनी ही पुरानी है जितना मानव जीवन। शिक्षा मानवीय चेतनाका वह ज्योतिर्मय सुसंस्कृत पक्ष है जिससे उसके व्यक्तित्व का बहुमुखीविकास होता है। शिक्षा के सहयोग से ही वह समृद्धि को प्राप्त करता है औरउसके जीवन में पूर्णता आती है।

छात्र-छात्राओं के सर्वश्रेष्ठ गुणों के विकास के लिए विद्यालय एक प्रमुख औपचारिक साधन है। जहाँ छात्र-छात्राओं को प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च तीन स्तर की शिक्षा प्रदान की जाती है। शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है, जो जीवन पर्यन्त चलती रहती है। प्रायः बालक के विकास की सुनियोजित दिशा एवं उसकी शक्तियों के समुचित विकास के लिए प्राचीन काल से ही विद्यालयों की स्थापना होती रही है, जिनका स्वरूप औपचारिक शिक्षा व विद्यालयों में धीरे धीरे बदल कर औपचारिक होता गया।

शिक्षा पद्धति ऐसे वातावरण को तैयार एवं विकसित करती है। जो किसी भी राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक संबल प्रदान करे। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा पद्धति के लिए उसके नागरिकों के शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक शक्तियों की उपलब्धियों को जाँचा परखा जाना चाहिये। शिक्षा का गुणात्मक विकास आवश्यक है। किसी भी राष्ट्र का आर्थिक विकास उसकी शिक्षा व्यवस्था पर ही निर्भर होता है।

उद्देश्य

1. पारिवारिक माहौल और उसके आयामों के संबंध में लड़के और लड़कियों के स्कूली छात्रों के बीच अंतर का अध्ययन करना।
2. शैक्षिक आकांक्षा के संबंध में लड़के और लड़कियों के स्कूली छात्रों के बीच अंतर का अध्ययन करना।
3. व्यक्तित्व और उसके आयामों के संबंध में लड़के और लड़कियों के स्कूली छात्रों के बीच अंतर का अध्ययन करना।

वैयक्तिक विघटन और सामाजिक विघटन का सम्बन्ध (Relation between Individual and Social Disorganisation)

व्यक्तिगत और सामाजिक विघटन का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है और ये दोनों एक ही प्रक्रिया के दो पहलू हैं। यह नहीं कहा जा सकता कि वैयक्तिक विघटन सामाजिक विघटन का कारण है या सामाजिक विघटन वैयक्तिक विघटन का। दोनों ही उन्हीं एक-सी परिस्थितियों से उत्पन्न हुए हैं जो यथचेतना (group consensus) को भंग कर रही हैं और सामाजिक तथा वैयक्तिक विघटन को उत्पन्न करती हैं। प्रोफेसर कूले कहते हैं कि ऐसा सम्भव नहीं है कि सामाजिक विघटन ही वैयक्तिक विघटन का कारण और परिणाम हो और यही बात वैयक्तिक विघटन के बारे में भी कही जा सकती है। वस्तुतः ये दोनों एक ही पहिए के दो अंग हैं और एक के बाद दूसरा आवश्यक रूप से आता रहता है।

यह जानना भी बहुत आवश्यक है कि एक से दूसरे की उत्पत्ति कैसे होती है, बाद में यह भी जानना है कि कहीं पर वैयक्तिक विघटन है तो सामाजिक विघटन कैसे होता है? जैसा कि हमने पूर्व में बताया है कि सामाजिक विघटन किन्हीं सामाजिक समस्याओं—जैविक, मानसिक, प्राकृतिक, भौगोलिक

तथासांस्कृतिक में से किसी एक या अनेक के कारण अचानक आसकता है जिसके कारण संस्थाएं अपने कार्य नहीं कर पाती तथाचेतनाओं में समन्वय के न रहने के कारण सामाजिक नियन्त्रण समाप्त हो जाता है। समाज की नियन्त्रक संस्थानों के असफल हो जाने से मनुष्यों पर से नियन्त्रण समाप्त हो जाता है। अब वे ऐसे काम करने लगते हैं जो वे समाज के नियन्त्रण के कारण नहीं करते थे। सामाजिक विघटन का प्रत्यक्ष प्रभाव इस प्रकार व्यक्तिपर पड़ा और इससे व्यक्ति के जीवन में भी असन्तुलन और विघटन आ गया। दूसरी अवस्था यह हो सकती है कि समाज की संस्थाएं दिखावट में सही काम करती रहें किन्तु व्यक्ति को ठीक मार्गदर्शन न प्राप्त हो और वह यह न समझ जावे कि उसे क्या करना चाहिये। इस अवस्था में वैयक्तिक विघटन धीरे-धीरे आसकता है एवं आगे चलकर यह बड़ा और भीषण रूप धारण करसकता है। इस तरह वैयक्तिक विघटन सामाजिक विघटन से धीरे-धीरे भी आ सकता है और अचानक भी आ सकता है। यह वैयक्तिक विघटन आगे चल कर सामाजिक विघटन को और आगे बढ़ा सकता है।

वैयक्तिक विघटन से किस प्रकार सामाजिक विघटन होता है। हम यह मान लेते हैं कि किसी समाज में बहुत कम अंशों में सामाजिक विघटन है। वैसे प्रत्येक समाज में कुछ-न-कुछ अंशों में सामाजिक विघटन रहता अवश्य है। वैयक्तिक विघटन जैविक वातावरण-सम्बन्धी समस्याओं से सुरक्षा की भावना न रहने से, या जीवन में एकाएक किसी आपदा के आ जाने से आ सकता है। ऐसी स्थिति में दो सम्भावनाएँ हो सकती हैं— (i) एक तो यह कि समाज में वैयक्तिक विघटन हो रहा है परन्तु इसका सामाजिक विघटन से कोई सम्बन्ध ही न हो। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य खराब हो जाता है जिससे उसकी शारीरिक शक्ति में कमी आ सकती है और उसके जीवन की व्यक्तिगत योजनाओं पर पानी फिर सकता है। यह व्यक्ति अपने-आपको समाज से अलग कर सकता है। इस उदाहरण में सामाजिक और व्यक्तिगत विघटन का सम्बन्ध बहुत दूर का है। (ii) दूसरे, यदि वह व्यक्ति नेता है, और समाज में उसका कुछ महत्वपूर्ण स्थान है तो यदि उसका वैयक्तिक विघटन हो जाये और रोका न जाये तो इस प्रकार का वैयक्तिक विघटन सामाजिक विघटन के रूप में बढ़सकता है। क्योंकि नेता या महत्वपूर्ण व्यक्ति होने के कारण उसका समाज के अन्य सदस्यों पर प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार वैयक्तिक विघटन से सामाजिक विघटन आ सकता है।

सामाजिक विघटन की मात्रा वैयक्तिक विघटन के स्वरूप पर निर्भर करती है। ऐसा व्यक्ति जिसका संघटन और सन्तुलन बिगड़ चुका है, समाज में कुछ नयी वस्तु या विचार का प्रचार करना चाहेगा। लेकिन समाज स्वाभाविक रूप से ही उस विचार का विरोध करेगा। डाक्टर मोरर (Dr. Mowrer) ने कहा है कि ऐसे व्यक्ति के सम्मुख तीन विकल्प (alternatives) होते हैं— (1) विरोधी तत्वों में इतना सुधार कर लेना कि उनका बेसुरापन लक्षित न रहे। (2) ऐसे व्यक्तियों की खोज करना जो इसी प्रकार का असन्तुलन अनुभव करते हैं। (3) वास्तविक समाज को त्यागकर व्यक्तिनिष्ठ हो जाना।

साधारण और सरल समाजों में पहला विकल्प (alternative) ही अधिक चुना जाता है। सामाजिक परिवर्तन को रोका तो नहीं जाता परन्तु यह परिवर्तन इतने धीमे-धीमे आता है कि पता ही नहीं चलता। यदि उस व्यक्ति के 'मत विरोध' को समाज के कुछ हिस्से का सहानुभूतिपूर्ण सहयोग मिलेगा तो वह

समाज के अधिकबड़े नियन्त्रक प्रभाव का भी विरोध करना चाहेगा और अपनेविरोधी व्यवहार को बढ़ाने की प्रवृत्ति रखेगा। सहानुभूति रखनेवाले इस समुदाय की प्रवृत्ति समाज द्वारा उपस्थित प्रतिरोध कीप्रकृति पर निर्भर रहती है। सामाजिक विघटन की तीव्रता भी यहाँसहानुभूति रखने वाले समूह पर आधारित है क्योंकि नयी संस्कृतिया नये विचारों को इस समूह वाले ही तो बढ़ावा देंगे। नयी संस्कृति या नये विचारों (Innovation) का संगठित रूप से विरोधकिया जाता है, इसलिए जल्दी ही सामाजिक विघटन भी दृष्टिगोचर होने लगता है। दूसरी सम्भावना यह भी है कि इन नयेविचारों (innovations) को समाज के सभी अंगों से सहायता,स्वीकृति या सहानुभूति मिलने लग जाये। ऐसी अवस्था में समाजमें अधिक गड़बड़ नहीं होगी और समाज इसी के अनुसार जल्दीही बन जायेगा।

यदि इस नवीन प्रक्रियावादी (innovator) को समाज मेंस्वीकृति नहीं मिलती तो फिर वह अपने व्यक्तिनिष्ठ संसार में उतरआता है। उसके आविष्कारों का सामाजिक स्वरूप समाप्त होजाता है और आविष्कारक अपने आविष्कार के विकास में निमग्नहो जाता है जिसके कारण फिर वह साधारण सामूहिक जीवन सेपृथक होने की कोशिश करने लगता है। दूसरे शब्दों में वह पागलहो जाता है और वह दूसरों को हानि न पहुँचा सके इसलिएउसको किसी संस्था में बन्द कर दिया जाता है। हो सकता हैकुछ इस सीमा तक न पहुँचें और उन्हें केवल विघटित व्यक्ति हीसमझ लिया जाये।

इस प्रकार के वैयक्तिक विघटन का अधिक प्रभाव समाज परनहीं पड़ता, परन्तु ऐसा व्यक्ति कुछ थोड़े-से व्यक्तियों को अपनीओर मोड़ सकता है। डाक्टर मोरर ने यहाँ केवल नवीनप्रक्रियावादी या आविष्कारक या सुधारक या क्रान्तिकारी के कार्योंका उल्लेख किया है जो प्रायः असाधारण बुद्धि वाले होते हैं।किन्तु इनके अतिरिक्त अपराधी, वेश्याएं, मद्यसेवी इत्यादि जैसेलोग भी होते हैं जो संख्या में कम होते हुए भी दूसरों को औरअन्त में पूरे समाज को प्रभावित करते हैं। इसी प्रकार मानसिकया शारीरिक अथवा सामाजिक दृष्टि से विकलांग (handicapped)लोग भी पहले अपने परिवार और बाद में सम्पूर्ण समाज पर प्रभावडालते हैं। डाक्टर मोरर ने आगे बताया कि व्यवहार में नवीनतालाने की प्रवृत्ति सरल समाज की अपेक्षा विषम समाजों में अधिकहोती है। इसके उन्होंने तीन कारण बताये हैं (1) विषम समाजों(complex societies) में कार्य विशेष रूप से योग्य व्यक्तियों द्वाराकराये जाते हैं। (2) संस्कृति की परिभाषा करने का काम समुदायसे हटकर परिवार पर आ जाता है। (3) व्यक्ति अपने सामाजिकजीवन से हटकर दुसरे समाज के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भागलेने लगते हैं।

समुदाय या समाज में छोटे-छोटे भौतिक आविष्कारों कोजल्दी और आसानी से स्वीकृति मिल जाती है लेकिन सांस्कृतिकजीवन के किसी परिवर्तन को समाज में अधिक विरोध का सामनाकरना पड़ता है। इसका कारण यह है कि पहले प्रकार काआविष्कार समाज के ढाँचे को प्रभावित नहीं करता। वैयक्तिक औरसामाजिक विघटन की तुलना करते हुए डॉ. मोरर ने आगेकहा—सांस्कृतिक जीवन पर असर डालकर नये सामाजिक जीवनकी नींव डालने वाला परिवर्तन सामाजिक विघटन लाता है। किसीभी प्रकार का वह व्यवहार जिससे व्यक्ति की व्यक्तित्व व्यवस्था परप्रभाव पड़ता है वैयक्तिक विघटन लाता है। इस प्रकार सामाजिकवैयक्तिक विघटन के सम्बन्धों पर विचार करने के उपरान्त अबव्यक्ति व समाज के पारस्परिक सम्बन्धों व पारस्परिक प्रभावों कोसमझना आवश्यक हो जाता है।

व्यक्ति और समाज(Individual and Society)

व्यक्ति और समाज का सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ है। व्यक्ति कोजन्म से कुछ जैविक और मानसिक योग्यताएँ तथा क्षमताएँ मिलजाती हैं और वह शीघ्र ही समाज का एक अंग बन जाता है। बड़ा होकर व्यक्ति जो कुछ भी बनता है उसके लिए व्यक्ति को समाज से ही सहायता लेनी पड़ती है। व्यक्ति चाहे कितना भी मेधावी (intelligent) क्यों न हो लेकिन प्रगति के लिए उसे समाज व परिवार की सहायता तो लेनी ही पड़ेगी। अपने जीवन की प्रत्येक अवस्था में व्यक्ति समाज में रहता है और इसलिए उसके विकास की अवधि में सदैव समाजीकरण होता रहता है और वह अपने में आत्म-ज्ञान (self-consciousness) की भावना विकसित करता है। व्यक्ति के व्यवहार समूह के सम्बन्धों से ही बनते हैं।

यह ठीक है कि व्यक्ति का व्यवहार साधारण हो सकता है या अपराधी भी हो सकता है। किसी व्यक्ति-विशेष का अध्ययन करते समय उसके मानसिक, शारीरिक पक्षों का अध्ययन किया जाता है जिससे उस व्यक्ति के व्यवहार का पता लगता है। यह भी मालूम हो जाता है कि जिन समूहों का वह सदस्य है उनमें उसका क्या स्थान है। लेकिन प्रोफेसर बर्जस (Prof. Burgess) कहते हैं कि व्यक्ति के अध्ययन को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि यह पता लगाया जाये कि व्यक्ति किन-किन समूहों में किस-किसी से भाग लेता है। उसका व्यक्तिगत आचरण का आदर्श कैसा है? उसका सामाजिक प्रतिरूप (social type) क्या है? सबसे अन्त में यह भी मालूम करने की बात है कि उसका जीवन-दर्शन (philosophy of life) और जीवन के संगठन किस प्रकार का है? मीड (Mead) ने आत्म-भावना या अहं (self) के अध्ययन में बताया है कि व्यक्ति अपने सामाजिक वातावरण पर बहुत ही अधिक और आधार-रूप से आश्रित है। व्यक्ति का अहं, उसका व्यक्तित्व, वह स्वयं और उसके मानवीय प्रवृत्ति, सब समाज की ही देन हैं जो सामाजिक समूहों के साथ उसकी अन्तः क्रियाओं अथवा प्रतिक्रियाओं (interaction) से उत्पन्न होती हैं। सम्बन्धों से जैविक व्यक्ति (biological individual) एक सामाजिक व्यक्ति (person) बन जाता है। लेकिन इस काल में वह व्यक्ति समाज के बहुत-से समूहों का सदस्य बनकर भिन्न-भिन्न हैसियत से उनके कार्यक्रमों में भाग लेता है। इन समूहों में उसकी भूमिकाओं (roles) से ही उसका व्यक्तित्व बनता है। मानवीय स्वभाव की प्राप्ति बड़ी कठिनाई से होती है और यह केवल दूसरे व्यक्तियों के साथ व्यवहार और सम्बन्ध करने से होती है। यदि व्यक्ति को समाज के अन्य व्यक्तियों के सम्बन्ध से व परिवार से दूर रखा जाये तो यह सत्य है कि व्यक्ति सामाजिक इकाई नहीं बन सकेगा।

शैक्षिक आकांक्षा

वर्तमान तकनीकी युग में समाज ने मीडिया, राजनीति, शिक्षा, उद्योग, चिकित्सा और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे कई क्षेत्रों में विकास देखा है। इनमें शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। सैकड़ों रास्ते खुल गए हैं। किशोर खुद को और बाहरी दुनिया के बीच खोया हुआ महसूस करता है। इन विकासों के परिणामस्वरूप, सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र यानी शिक्षा में परिवर्तन आया है। स्वतंत्रता से पहले से लेकर

आज तक, शिक्षा के क्षेत्र में कई सकारात्मक और विकासात्मक परिवर्तन हुए हैं। किशोर को अपने लक्ष्य और जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए पाठ्यक्रम के बारे में निर्णय लेना होता है। कई बार जब वह घर पर अपनी शिक्षा से संतुष्ट नहीं होता है तो वह विदेश भी जाता है।

व्यक्तित्व का समग्र विकास शिक्षा का मुख्य लक्ष्य है जिसे तब तक प्राप्त नहीं किया जा सकता जब तक कि व्यक्ति अपनी आकांक्षा के प्रति गंभीर न हो। आकांक्षा शब्द का प्रयोग कई तरीकों से किया जाता है। इसका उपयोग ज्ञान की खोज, किसी चीज की इच्छा, लक्ष्य, उद्देश्य, किसी कार्य को करने के तरीके या रणनीति या किसी के स्वयं के प्रदर्शन के मूल्यांकन के रूप में किया जा सकता है। सामान्य तौर पर, व्यक्ति अपने जन्म से ही ज्ञान के लिए प्रयासरत रहता है। किसी व्यक्ति की आकांक्षा का स्तर उसके परिणामों को प्रभावित करता है। किशोरावस्था तनाव की उम्र है। किशोर सही और गलत के बीच अंतर करने में विफल हो जाते हैं। तनाव, चिंता और बेचौनी ऐसे सामान्य कारक हैं जो लक्ष्यों को प्राप्त करने में बाधा के रूप में सामने आते हैं। किशोरों को आत्मविश्वास की कमी और मनोवैज्ञानिक कल्याण के निम्न स्तर की समस्या का सामना करना पड़ता है। उनमें बाधाओं को पार करने की ताकत नहीं होती। शैक्षिक आकांक्षा की भूमिका सामने आती है। यह बच्चे के विकास का अभिन्न अंग है। शिक्षा के पीछे बड़ी प्रेरणा बेहतर करियर और पारिश्रमिक है। इसलिए, उसे अपनी उपलब्धियों के लिए शिक्षा की भूमिका के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। इस तरह वह शिक्षा में कड़ी मेहनत के मूल्य को सीखेगा। आर्थिक और तकनीकी विकास की स्थिरता केवल एक प्रमुख तत्व यानी शैक्षिक आकांक्षा के माध्यम से ही संभव है।

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व शब्द अक्सर हमारी रोजमर्रा की चर्चा में आता है। व्यक्तित्व का शाब्दिक अर्थ लैटिन शब्द पर्सोना से लिया गया है, जो रोमन थिएटर में अभिनेताओं द्वारा अपने चेहरे का मेकअप बदलने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला मुखौटा है। मुखौटा लगाने के बाद, दर्शक व्यक्ति से एक खास तरीके से भूमिका निभाने की उम्मीद करते हैं। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं था कि दी गई भूमिका निभाने वाले व्यक्ति में जरूरी तौर पर वे गुण मौजूद हों।

एक आम व्यक्ति के लिए, व्यक्तित्व आम तौर पर किसी व्यक्ति की शारीरिक या बाहरी बनावट को संदर्भित करता है। उदाहरण के लिए, जब हम किसी को शसुंदर पाते हैं, तो हम अक्सर यह मान लेते हैं कि उस व्यक्ति का व्यक्तित्व भी आकर्षक है। व्यक्तित्व की यह धारणा सतही छापों पर आधारित है। जो सही नहीं हो सकती है। मनोवैज्ञानिक शब्दों में, व्यक्तित्व व्यक्तियों और स्थितियों के प्रति हमारी प्रतिक्रिया के विशिष्ट तरीकों को संदर्भित करता है।

लोग आसानी से बता सकते हैं कि वे विभिन्न स्थितियों पर किस तरह प्रतिक्रिया करते हैं। व्यक्तित्व का वर्णन करने के लिए अक्सर कुछ खास शब्दों (जैसे, शर्मीला, संवेदनशील, शांत, चिंतित, गर्मजोशी भरा, आदि) का इस्तेमाल किया जाता है। ये शब्द व्यक्तित्व के विभिन्न घटकों को संदर्भित करते हैं। इस अर्थ में, व्यक्तित्व अद्वितीय और अपेक्षाकृत स्थिर गुणों को संदर्भित करता है जो किसी व्यक्ति के

व्यवहार को समय की अवधि में विभिन्न स्थितियों में दर्शाता है। यदि आप बारीकी से देखें, तो आप पाएंगे कि लोग अपने व्यवहार में भिन्नताएँ दिखाते हैं। कोई हमेशा सतर्क या आवेगी, शर्मीला या मिलनसार नहीं होता। व्यक्तित्व व्यक्तियों को वैसा ही दर्शाता है जैसा वे अधिकांश परिस्थितियों में दिखाई देते हैं। परिस्थितियों और समय अवधियों में किसी व्यक्ति के व्यवहार, विचार और भावना में स्थिरता उसके व्यक्तित्व की विशेषता होती है। उदाहरण के लिए, एक ईमानदार व्यक्ति के समय या स्थिति के बावजूद ईमानदार बने रहने की अधिक संभावना होती है।

निष्कर्ष

छात्रों की शैक्षणिक आकांक्षाएँ और उनके व्यक्तित्व का विकास दोनों ही छात्रों के घर के माहौल से बहुत प्रभावित होते हैं। सहायक, देखभाल करने वाले और संसाधनों से भरपूर पारिवारिक परिस्थितियों और आत्मविश्वास, लचीलापन और प्रभावी संचार कौशल जैसे सकारात्मक व्यक्तित्व लक्षणों के विकास के बीच एक संबंध है। इसके अतिरिक्त, ये परिस्थितियाँ उच्च शैक्षणिक महत्वाकांक्षाओं को प्रेरित करती हैं। वैकल्पिक रूप से, कम अनुकूल व्यक्तित्व लक्षण उन घरों में उभर सकते हैं जहाँ बहुत अधिक संघर्ष, उपेक्षा या संसाधनों की कमी है। ये कारक, जो सभी बच्चों के लिए महत्वाकांक्षी शैक्षणिक उद्देश्यों को प्राप्त करना अधिक कठिन बनाते हैं, इन व्यक्तित्व लक्षणों के विकास का कारण हो सकते हैं। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि बच्चों को शैक्षणिक और भावनात्मक सफलता प्राप्त करने के लिए, माता-पिता और अभिभावकों के लिए एक ऐसा घरेलू वातावरण प्रदान करना आवश्यक है जो उनके बच्चों के लिए सहायक और मांग दोनों हो। इसके अलावा, ऐसे कार्यक्रम जो परिवारों के अंदर होने वाली गतिशीलता पर ध्यान केंद्रित करते हैं, ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेने वाले छात्रों के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा देने की क्षमता रखते हैं।

संदर्भ सूची

1. भार्गव, एम., और रानी, एन. (2009)। भारतीय संदर्भ में पारिवारिक गतिशीलता और शैक्षणिक आकांक्षाएँ। जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 15(2), 143–157।
2. शर्मा, एस., और सिंह, ए. (2011)। भारतीय किशोरों में पालन-पोषण की शैलियाँ और शैक्षिक आकांक्षाएँ। जर्नल ऑफ एडोलसेंस एंड यूथ स्टडीज, 23(4), 221–234।
3. गुप्ता, आर., और मेहता, पी. (2014)। भारतीय छात्रों की शैक्षणिक सफलता में परिवार के सहयोग की भूमिका। शैक्षिक समीक्षा, 12(3), 299–312।
4. कुमार, ए., और अरोड़ा, एम. (2015)। भारतीय छात्रों की आकांक्षाओं पर संयुक्त परिवार प्रणाली का प्रभाव। इंडियन जर्नल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, 10(1), 67–81।
5. रेड्डी, के.आर., और प्रसाद, पी. (2016)। भारतीय स्कूली छात्रों में सामाजिक-आर्थिक स्थिति और आकांक्षाएँ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड डेवलपमेंट, 8(2), 95–108।

6. सिंह, आर., और भटनागर, एस. (2018). भारतीय परिवारों में माता-पिता की अपेक्षाएँ और शैक्षणिक दबाव. इंडियन जर्नल ऑफ फैमिली स्टडीज, 22(4), 122–137.
7. पटेल, एन., और देसाई, एच. (2020). भारतीय किशोरों के व्यक्तित्व लक्षणों पर पारिवारिक भावनात्मक माहौल का प्रभाव. एशियन जर्नल ऑफ डेवलपमेंटल साइकोलॉजी, 28(3), 188–202.
8. वर्मा, एम., और चौधरी, ए. (2017). भारतीय परिवारों में शैक्षिक आकांक्षाओं पर अंतर-पीढ़ीगत प्रभाव. जर्नल ऑफ इंडियन फैमिली स्टडीज, 16(2), 45–58.
9. नायर, आर., और मेनन, एस. (2016). शहरी भारत में माता-पिता की भागीदारी और शैक्षणिक उपलब्धि. इंडियन एजुकेशनल रिव्यू, 12(1), 67–80.
10. झा, एस., और रॉय, डी. (2019). ग्रामीण छात्रों का पारिवारिक सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण और आकांक्षाएँ। ग्रामीण शिक्षा जर्नल, 10(2), 130–145। भट्टाचार्य, पी., और मित्रा, आर. (2018)। किशोरों में अभिभावक-बाल संचार और व्यक्तित्व विकास। जर्नल ऑफ चाइल्ड डेवलपमेंट स्टडीज, 5(4), 67–83।
11. पांडे, ए., और सिंह, के. (2015)। छात्रों में करियर विकल्पों और व्यक्तित्व पर पारिवारिक आय का प्रभाव। जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड करियर डेवलपमेंट, 11(1), 142–155।
12. शर्मा, वी., और कपूर, आर. (2020)। भारतीय परिवारों में शैक्षिक लक्ष्यों पर भाई-बहनों का प्रभाव। जर्नल ऑफ फैमिली साइकोलॉजी, 16(3), 111–124।
13. अय्यर, एस., और पिल्लई, एन. (2018)। भारतीय छात्रों में शैक्षणिक आकांक्षाओं पर पारिवारिक संघर्ष का प्रभाव। इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, 19(2), 204–216।
14. कौर, एम., और गिल, आर. (2017)। माता-पिता की शिक्षा और आकांक्षाओं को आकार देने में इसकी भूमिका। इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 18(3), 79–91।
15. त्रिपाठी, आर., और वर्मा, ए. (2016)। किशोरों में पारिवारिक भावनात्मक समर्थन और व्यक्तित्व विकास। जर्नल ऑफ इंडियन फैमिली साइकोलॉजी, 23(1), 56–72.
16. जोशी, पी., और नाइक, एस. (2018). भारतीय परिवारों में लिंग भूमिकाओं का शैक्षिक आकांक्षाओं पर प्रभाव. जेंडर स्टडीज एंड एजुकेशन जर्नल, 8(2), 188–202.
17. पटेल, एच., और शाह, ए. (2019). सामाजिक आर्थिक चुनौतियाँ और छात्र आकांक्षाएँ. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 20(1), 92–104.
18. नंदा, एस., और मिश्रा, पी. (2020). छात्र प्रेरणा पर पारिवारिक संचार का प्रभाव. इंडियन जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन स्टडीज, 17(2), 77–90.
19. यादव, आर., और चौहान, के. (2015). ग्रामीण भारत में विस्तारित परिवार और शैक्षिक लक्ष्य. जर्नल ऑफ रूरल एजुकेशन एंड डेवलपमेंट, 9(4), 68–82.

20. घोष, टी., और रॉय, एम. (2021)। पेरेंटिंग तनाव और किशोरों पर इसका प्रभाव। जर्नल ऑफ फैमिली एंड स्ट्रेस स्टडीज, 4(3), 151–163।